(16 & A-5) SEAT No._____

No.of printed pages:2

SARDAR PATEL UNIVERSITY

B.A . (I- Semester) EXAMINATION

Saturday 20 October 2018 Time: 10:00 A.M. To 01:00 P.M.

(UA01FHIN01) Foundation Elective Hindi Paper-1

(सात श्रेष्ठ कहानियाँ)

Total Marks:70

सूचनाः हिन्दी भाषा में शिरोरेखा करना अनिवार्य है।

प्र.१ ससंदर्भ व्याख्या कीजिए। (किन्हीं तीन) (१५)

(१) "वहाँ आदमी जितने ज्यादा को मारता है उतना ही अपने को कामयाब समझता है। और लोग इसके लिए इनाम और प्रतिष्ठा देते हैं।"

(२) "आप मुझे कुछ काम दें ताकि मैं अपनी रोजी कमा सकूँ। मैं विदेशी हूँ, आपके देश में भूखा मर रहा हूँ, कोई भी काम आप मुझे दें मैं करूँगा। आप परीक्षा लें। मेरे पास रोटी का टुकड़ा भी नहीं है।"

(३) "वह मेरी ओर से है। सब चीजें हैं दीदी। शीतल पाटी, चिक और एक जोड़ी आसनी कुश की।"

(४) "यद्यपि उन उतने स्वर्गाभिलाषियों की भीड़ में त्रिवेणी स्नान के दुर्लभ पुण्य की प्राप्ति की अपेक्षा सुशीला के खो जाने का भय ही विशेष था, फिर भी उसने उस समय हाँ कर दी जैसे भावी ही उसके सिर पर चढ़कर बोल दी।"

(५) "मगर काम करना तो मानवी का स्वभाव है। बेकारी में जीवन कैसे कटता?"

प्र.२ 'प्रेरणा' कहानी के आधार पर सूर्यप्रकाश का चरित्र-चित्रण कीजिए। (२०)

अथवा

प्र.२ टिप्पणी लिखिए।

(१) 'मर्द' कहानी का उद्देश्य

(२) 'ठेस' कहानी का शीर्षक

प्र.३ सूचनानुसार लिखिए।

अ) निम्नलिखित गद्यांश का सार एक तिहाई शब्दों में लिखिए और उचित शीर्षक दीजिए। (०५)

मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं। उत्सवों का एक मात्र उद्देश्य आनन्द-प्राप्ति है। यह तो सभी जानते हैं कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है। आवश्यकता की पूर्ति होने पर सभी को सुख होता है। पर, उस सुख और उत्सव के इस आनन्द में बड़ा अन्तर है। आवश्यकता अभाव सूचित करती है। उससे यह प्रकट होता है कि हममें किसी बात की कमी है। मनुष्य-जीवन ही ऐसा है कि वह किसी भी अवस्था में यह अनुभव नहीं कर सकता कि अब उसके लिए कोई आवश्यकता नहीं रह गई है। एक के बाद दूसरी वस्तु की चिन्ता उसे सताती ही रहती है। इसलिए किसी एक आवश्यकता की पूर्ति से उसे जो सुख होता है, वह अत्यंत क्षणिक होता है; क्योंकि तुरन्त ही दूसरी आवश्यकता उपस्थित हो जाती है। उत्सव में हम किसी बात की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते। यही नहीं, उस दिन हम अपने काम-काज छोड़कर विशुद्ध आनंद की प्राप्ति करते हैं। यह आनंद जीवन का आनंद है, काम का नहीं। उस दिन हम अपनी सारी आवश्यकताओं को भूलकर केवल मनुष्यत्व का खयाल करते हैं। उस दिन हम अपनी स्वार्थ-चिन्ता छोड़ देते हैं, कर्तव्य-भार की उपेक्षा कर देते हैं तथा गौरव और सम्मान को भूल जाते हैं। उस दिन हममें उच्छृंखलता आ जाती है, स्वच्छन्दता आ जाती है। उस रोज हमारी दिनचर्या बिलकुल नष्ट हो जाती है। व्यर्थ घूमकर, व्यर्थ काम कर, व्यर्थ खा-पीकर हम लोग अपने मन में यह अनुभव करते हैं कि हम लोग सच्चा आनंद पा रहे हैं।

आ) निम्नलिखित शब्दों के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए। (किन्हीं पाँच) (०५)

गगन, दिन, नयन, मृग, हाथ, नीर, अंधेरा

इ) विलोमार्थी शब्द लिखिए। (किन्हीं पाँच) (०५)

उदय, प्रतिकूल, रात, साक्षर, विराग, विष, सुख

ई) अनेकार्थी शब्द लिखिए। (किन्हीं पाँच) (०५)

तारा, अंबर, गिरिधर, दल, उत्तर, जलज, रंग

प्र.४ किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। (१५)

(१) राष्ट्रभाषा हिन्दी का महत्व

(२) विज्ञापन कला

(३) भ्रष्टाचारः समाज का महारोग

(४) भारतीय समाज में नारी का स्थान

—x—